माइकल मधुसूदन दत्त का होना

वंदना झा

माइकल की अच्छी कविताओं में से एक है– 'स्नेह के प्यास की नदी-कपोताक्ष', जिसमें माइकल सोचते हैं कि क्या वे कभी उसे दुबारा देख पाएँगे ? निश्चित रूप से यह कामना पूरी नहीं हो पाती और मृत्यु का आरामगाह बनती है यह नदी, जिस पर उन्होंने कविताएँ लिखीं।

हिंदी का पाठक माइकल मधुसूदन दत्त को बंगाल के नवजागरण के कवि के रूप में देखता है। शुरुआती दौर में हिंदी पाठकों का यह परिचय रामचंद्र शुक्ल के इतिहास के माध्यम से होता है, जब वे भारतेंदु हरिश्चंद्र के बारे में लिखते हैं : "अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा के बल से एक ओर तो वे पद्माकर, द्विजदेव की परंपरा में दिखाई पड़ते थे, दूसरी ओर बंगदेश के माइकल और हेमचंद्र की श्रेणी में।" यह अनायास नहीं था कि भारतेंदु मंडल के लेखकों में बालकृष्ण भट्ट ने माइकल मधुसूदन दत्त के 'पद्मावती' और 'शर्मिष्ठा' जैसे बाङ्ला के दो नाटकों का अनुवाद भी किया, वहीं भारतेंदु के फुफेरे भाई राधाकृष्ण दास बाङ्ला के कई उपन्यासों का अनुवाद करते हैं, जिनमें 'स्वर्णलता' और 'मरता क्या करता' प्रमुख हैं। कार्तिक प्रसाद खत्री ने 'इला', 'प्रमिला', 'जया', 'मधुमालती' जैसे बाङ्ला उपन्यासों

के अनुवाद किए, जो काशी के भारत जीवन प्रेस से प्रकाशित किए गए। केशवराम भट्ट सहित साहित्यकारों का एक बड़ा वर्ग बाङ्ला के कई उपन्यासों के अनुवाद में लग गया था।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल अपनी पुस्तक 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में लिखते हैं : "बंग भाषा फिर भी अपने देश की ओर देखती हिंदी से मिलती-जुलती भाषा थी, उसके अभ्यास से प्रसंग या स्थल के अनुरूप बहुत ही सुंदर और उपयुक्त संस्कृत शब्द मिलते थे। अत: बंग भाषा की ओर जो झुकाव रहा, उसके प्रभाव से बहुत ही परिमार्जित और सुंदर संस्कृत पद-विन्यास की परंपरा हिंदी में आयी, यह स्वीकार करना पड़ता है।"

माइकल मधुसूदन दत्त बंगाल के पुनर्जागरण काल के आरंभिक काल में थे, जब बंगाल पश्चिम की संस्कृति और शिक्षा का केंद्र बना हुआ था। यह वह समय था, जब साहित्य के माध्यम से संस्कृति, राष्ट्र और राष्ट्रीय पहचान की अवधारणाओं को नया आकार दिया जा रहा था। हमारे महाकाव्य– 'रामायण', 'महाभारत' और 'गीता' चिंतन के केंद्र में थे। अनूठी सांस्कृतिक दृष्टि और विरासत का आविर्भाव नए युग की नींव रख रहा था। एक प्रकार से उन्नीसवीं सदी पुनर्कथन का काल बन गया था। यह समझ विकसित हो गई थी कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का तेज ही भारत को पश्चिमी चिंतन के आक्रमण से बचा सकता है। उस युग में सायास प्रयत्न अपनी परंपरा और संस्कृति को बचाने को लेकर हो रहे थे। भक्तिकाल के बाद यह एक ऐसा काल था, जब आस्था हमारे चिंतन का विषय बनने लगी थी। ऐसे समय में माइकल मधुसूदन दत्त अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा के साथ अवतरित होते हैं। बाङ्ला साहित्य को महत्तम ऊँचाई देने में उनकी भूमिका को याद किया जाता है। इतिहास हमारी प्रेरणा और चेतना का विषय कैसे बनता है, उसे मधुसूदन दत्त की रचनाओं को देखकर समझा जा सकता है। हिंदी में अनुवाद की परंपरा का विकास और उस परंपरा के माध्यम से अपने इतिहास और संस्कृति का आकलन और पुनरीक्षण मधुसूदन दत्त के कारण न सिर्फ बाङ्ला में, बल्कि हिंदी में भी हुआ।

"बाङ्ला के उत्कृष्ट सामाजिक, पारिवारिक और ऐतिहासिक उपन्यासों के लगातार आते रहने से रुचि परिष्कृत होती रही, जिससे कुछ दिनों की तिलिस्म, ऐय्यारी और जासूसी कृतियों के उपरांत उच्च कोटि के सच्चे साहित्यिक उपन्यासों की मौलिक रचना का दिन भी ईश्वर ने दिखाया।" हिंदी में इस मौलिकता के आगमन से पहले बाङ्ला भाषा की जड़ता को तोड़ने का कार्य माइकल मधुसूदन दत्त ने किया, जिसका प्रभाव बाङ्ला के साथ हिंदी की रचनाधर्मिता पर भी पड़ा और हिंदी के पुनर्जागरण को एक आधार मिला। शुक्ल जी लिखते हैं : "यह सहज नहीं है कि बंग भाषा के अनुवाद की परंपरा बिना किसी प्रवाह के हिंदी में चल पड़ी। बाबू रामकृष्ण वर्मा ने 'वीर नाड़ी', 'कृष्णा कुमारी' और 'पद्मावती' नाटक का हिंदी में अनुवाद किया तो पंडित रूपनारायण पांडेय ने गिरीश बाबू के 'पतिव्रता' नाटक, क्षीरोदप्रसाद विद्या विनोद के 'खान जहाँ', रवींद्र बाबू के 'अचलायतन' और द्विजेंद्रलाल राय के 'उस पार', 'शाहजहाँ', 'दुर्गा दास', 'ताराबाई' आदि कई नाटकों के अनुवाद प्रस्तुत किए। यही नहीं, बाबू रामकृष्ण वर्मा ने 'चित्तौर चातकी' का बाङ्ला भाषा से अनुवाद किया।

कहना होगा कि माइकल मधुसूदन दत्त ने विश्व साहित्य का अध्ययन कर सर्वप्रथम अंग्रेजी में और बाद में बाङ्ला भाषा में अमित्राक्षर छंद के अभिनव प्रयोग के साथ इतालवी सॉनेट का प्रयोग किया, वहीं उन्होंने नाट्य भाषा के रूप में बाङ्ला को ऊँचाई पर पहुँचाया। रवींद्रनाथ टैगोर जैसे लेखकों ने भी उनके अवदान को स्वीकारा। अंग्रेजी कवि बायरन की जीवन शैली को अपनाने वाले माइकल मधुसूदन दत्त के भारत प्रेम को समझा जा सकता है। निश्चित रूप से वे फ्रांस और इंग्लैंड जा कर स्वयं को एक महान कवि के रूप में स्थापित होते देखना चाहते थे, इससे उनका भारत के प्रति प्रेम कम नहीं हो जाता। अपने मित्र गौरदास बाबू को 27 नवंबर, 1842 की मध्य रात्रि को अंग्रेजी में पत्र लिखा, जिसका हिंदी रूपांतर हिंदी के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने इस प्रकार किया : "सूर्य चाहे उदय होना भूल जावे; परंतु इस देश को छोड़ने की इच्छा हमारे हृदय से अस्त नहीं हो सकती। वर्ष-दो वर्ष में या तो हम इंग्लैंड ही में होंगे या कहीं भी न होंगे।" और वे अपने विश्वास को पूरा करते हैं। फ्रांस में रहते हुए उन्होंने सबसे पहले बाङ्ला में 'बाग्भाषा' और 'कपोताक्ष नाद' जैसा सॉनेट लिखा। यह दोनों सॉनेट उनकी भावनाओं को दर्शाते हैं, जिसमें अपनी मातृभाषा और मातृभूमि को विस्मृत नहीं कर पाते। उनके आख्यान विषयक काव्य को देखने के लिए यह ध्यान रखना होगा कि काव्यात्मक शैली के माध्यम से वह बाङ्ला भाषा को लैटिन और ग्रीक की तरह देखना चाहते थे और स्वयं को दाँते और मिल्टन की तरह स्थापित करना चाहते थे। वास्तव में माइकल मधुसूदन दत्त की रचनाएँ पूर्व और पश्चिम का सम्मिश्रण साबित हुईं, जिनमें शैली तो पश्चिम से ली गई, लेकिन कथानक पूर्व का था। 'मेघनाद वध' जैसी अप्रतिम कृति देशानुराग के साथ विश्वानुराग की कथा बन जाती है। इसीलिए बंकिमचंद्र चटर्जी ने कवियों में जयदेव और मधुसूदन को महान मानते हुए कहा, "अपनी जातीय पताका उड़ा दो और उस पर अंकित करो श्री मधुसूदन।" रामकृष्ण परमहंस ने उसे 'बंग भाषा का मुकुटमणि' कहा। उन्होंने 'मेघनाद वध' काव्य को हिमालय पर्वत की तरह आकाश भेदकर खड़ा रहने वाला गगनभेदी काम बताया।

माइकल मधुसूदन दत्त का यह 200वाँ जयंती वर्ष है। उनका जन्म 25 जनवरी, 1824 को जैसोर के सागरदारी (वर्तमान में बांग्लादेश) में हुआ था। पिता राजनारायण दत्त उस समय के प्रख्यात वकील थे और माता जाह्नवी देवी घरेलू महिला थीं।

मधुसूदन दत्त की शिक्षा हिंदू कॉलेज, कोलकाता में हुई। अंग्रेजी के अतिरिक्त ग्रीक, लैटिन और संस्कृत भाषा पर उन्होंने कोलकाता में ही गंभीर अध्ययन किया। अंग्रेजी भाषा साहित्य के प्रति उनका विशेष आकर्षण था। कोलकाता, ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्यालय होने के कारण पश्चिमी संस्कृति अर्थात् अंग्रेजियत से प्रभावित था। प्रगतिशील चेतना की वाहक के रूप में अंग्रेजी बंगाल और लगभग संपूर्ण भारत में प्रसारित हो रही थी। पारंपरिक रूप से चली आ रही व्यवस्था के प्रति वे दुराग्रही थे, लेकिन भारतीय ज्ञान परंपरा के अवलोकन के प्रति सचेत होने के साथ-साथ उसके अनुरागी भी थे।

अंग्रेजी भाषा का महान कवि बनने की उत्कट भावना ने उन्हें अंग्रेजी में लिखने की ओर प्रेरित किया, बल्कि ईसाइयत को भी इन्होंने अपना लिया। परिवार और समाज से विद्रोह के कारण उन्हें कोलकाता छोड़ना पड़ा। इस परिवर्तन के कारण न सिर्फ उन्होंने 'हिंदू कॉलेज' को छोड़ा, बल्कि उन्हें 'बिशप कॉलेज' को भी छोड़ना पड़ा। छोड़ने का सिलसिला इतना तेज रहा कि उन्हें कोलकाता शहर छोड़ मद्रास (वर्तमान चेन्नई) आना पड़ा। मद्रास के 'प्रेसीडेंसी कॉलेज' में दाखिला ले लिया। पढ़ाई का खर्च निकालने के लिए 'मद्रास मेल ऑर्फन असाइलम' स्कूल में सन् 1848 से 1852 तक उन्होंने पढ़ाया। फिर मद्रास यूनिवर्सिटी हाई स्कूल में सन् 1852 से सन् 1856 तक जीवनयापन हेतु पढ़ाते रहे। ईसाई धर्म अपना लेने के कारण न सिर्फ घर-परिवार से दूर होते गए, बल्कि घर से प्राप्त होने वाला धन भी पूर्णत: बंद हो गया। अंग्रेजियत के आकर्षण ने उनकी वेश-भूषा को भी बदल दिया था। मद्रास में रहते हुए उन्होंने अंग्रेजी में दो काव्य कृतियों का सृजन किया, जिसमें पहला 'द कैप्टिव लेडी' था और दूसरा था 'विजन ऑफ द पास्ट'। 'टिमोथी पेनपोएम' के उपनाम से इन्होंने इसकी रचना की। इन कृतियों के प्रकाशन ने उन्हें भारत और विलायत में अंग्रेजी का कवि सिद्ध कर दिया। अंग्रेजी की दक्षता के कारण मद्रास के एकमात्र अंग्रेजी दैनिक 'स्पेक्टेटर' के वे सहायक संपादक बन गए।

माइकल मधुसूदन दत्त साहित्य जगत में क्रांतिकारी तेवर लेकर उभरे थे। तब तुकांत कविताओं का जोर था। उन्होंने मिल्टन के आदर्श को लेकर अतुकांत कविता लिखने का साहस किया। निश्चित रूप से पारंपरिक रचना पद्धति को छोड़ नई पद्धति अपनाना और उसे लोकप्रिय बना सकना मधुसूदन दत्त की धीरता और विश्वास का ही परिणाम था। बंगाल के विद्वान श्रीश्चंद्र विद्यारत्न ने भी जब इस छंद पर अविश्वास जताया तो प्रख्यात नाटककार दीनबंधु मित्र ने उन्हें स्वयं 'मेघनाद वध' पढ़ कर सुनाया और विद्यारत्न 'मेघनाद वध' के साथ उस छंद की प्रशंसा किए बिना न रह सके : *मैं तो उसे भाषे, क्रूर मानता हूँ सर्वथा/ दु:ख तुम्हें देने के लिए है गढ़ी जिसने/मित्राक्षर-बेड़ी। हा ! पहनने से इसने /दी है सदा कोमल पदों में कितनी व्यथा।*

बाङ्ला में 'रामायण' और 'महाभारत' का पाठ मधुसूदन के लिए श्रेयस्कर साबित हुआ। उनकी विलक्षणता संस्कृत, फारसी, पुर्तगाली, ग्रीक, लैटिन, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन और इतालवी भाषा के पठन–पाठन के साथ बढ़ती गई। हिब्रू, तमिळ, तेलुगु और हिंदी में भी अल्पाधिक विद्वता थी। विश्व साहित्य और भाषा का आकर्षण इतना तीव्र था कि वे स्वयं को मिल्टन, दाँते और बायरन के समकक्ष मानने लगे थे। उनका ऐसा सोचना कुछ लोगों को अतिशय भावुकता से भरा प्रतीत हो सकता है, लेकिन उनके अध्ययन-मनन की गति की तीव्रता और प्रयास को जो समझ सकेगा तो निस्संदेह उनकी रचनाधर्मिता वैश्विक धरातल पर महत्त्वपूर्ण पाएगा। उनके काव्यानुराग में फारसी कविताओं का कंठस्थ होना भी एक कारण रहा। बंगाल में दुर्गा पूजा के अवसर पर प्रस्तुत संगीत-प्रियता के साथ जन्मभूमि के प्राकृतिक सौंदर्य को बढ़ाती कपोताक्ष नदी उनके चिंतन में आकर्षण का केंद्र बनी रही।

माइकल मधुसूदन दत्त युवावस्था में ही बड़े कवि बन चुके थे। अंग्रेजी की कवित्व शक्ति में वे स्वयं को मिल्टन के निकट पाते थे, यद्यपि उन्हें बायरन बेहद पसंद थे। मधुसूदन न सिर्फ लेखनी में अंग्रेजी भाषा के कायल थे, बल्कि उन्होंने अपना विवाह भी नील व्यापारी की पुत्री से किया। अनिश्चितता, अस्थिरता, आत्मसंयम के अभाव ने उनके गृहस्थ जीवन को प्रभावित किया और दांपत्य जीवन टूट गया, लेकिन कुछ समय बीत जाने के बाद मद्रास के प्रेसीडेंसी कॉलेज के शिक्षक की पुत्री से इन्होंने पुनर्विवाह किया। 'द कैप्टिव लेडी' और 'विजन ऑफ द पास्ट' ने उन्हें प्रसिद्धि तो दिलाई, लेकिन उनके समकालीनों ने उनका मजाक भी उड़ाया। कोलकाता की 'एजुकेशन काउंसिल' के सभापति वेथून साहब ने उन्हें भाषायी ऊहापोह से निकाला और मधुसूदन को सलाह दी कि वे बाङ्ला भाषा में काव्य सृजन करें, जिससे बाङ्ला भाषा प्रतिष्ठा प्राप्त करे।

मधुसूदन ने वेथून साहब की बात को हृदय से ग्रहण किया और बाङ्ला भाषा को परिष्कृत करने हेतु अपनी पूरी शक्ति लगा दी। उनकी चतुर्दिक प्रसिद्धि का आधार बनी श्री हर्ष रचित 'रत्नावली' नाटक का अंग्रेजी अनुवाद। पंडित रामनारायण द्वारा इस नाटक का अनुवाद सर्वप्रथम बाङ्ला में किया गया, लेकिन अंग्रेज दर्शकों को खुश करने के लिहाज से इस नाटक का रूपांतरण मधुसूदन दत्त ने किया । इस नाटक के बेलगछिया की नाट्यशाला में मंचन ने मधुसूदन दत्त को प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचा दिया। अब मधुसूदन कोलकाता के प्रसिद्ध कवि और नाटककार बन गए थे। इस नाटक का यह प्रभाव हुआ कि मधुसूदन दत्त की मित्रमंडली ने उन्हें बाङ्ला भाषा में मूल नाटक लिखने की प्रेरणा दी। इस प्रेरणा के पीछे यह तर्क था कि बाङ्ला का कोई मूल नाटक होता तो अन्य भाषा से अनुवाद की आवश्यकता न पड़ती।

'शर्मिष्ठा' नाटक की आधारभूमि यही प्रेरणा बनी। सन् 1858 में इसका प्रकाशन हुआ और सन् 1859 में इसका मंचन किया गया। इस नाटक के मंचन से उस समय के तीन राजाओं– पाइक-पाड़ा के राजा प्रतापचंद्र और ईश्वरचंद्र के साथ यतींद्रमोहन ठाकुर ने इन्हें विशेष स्नेह दिया। यह स्नेह धन और यश दोनों रूप में मधुसूदन को प्राप्त हुआ। अनेक प्रकार की सहायता और प्रशस्ति से कविवर मधुसूदन दत्त ने अमित्राक्षर छंद के नए प्रयोग को चुनौती के रूप में स्वीकार किया। उनका मानना था कि यदि संस्कृत में अमित्राक्षर छंद का प्रयोग हो सकता है तो संस्कृत से निःसृत होने वाली भाषा बाङ्ला में क्यों नहीं ? दरअसल, मधुसूदन दत्त प्रयोगधर्मा तो थे ही, साथ ही चुनौती स्वीकार करना और समय से आगे चलना उनका स्वभाव था। निरंतर सृजन प्रक्रिया में लीन रहने वाले दत्त आलोचकों के पिष्ठपेषण का उत्तर अपनी सृजनधर्मी चेतना से देते थे। उन्होंने सबको सुना और रचनात्मक रूप से उत्तर दिया।

'पद्मावती' नाटक में उन्होंने अमित्राक्षर छंद का प्रयोग किया और पुनः 'तिलोत्तमा संभव' काव्य की रचना इसी छंद में रचकर बाङ्ला भाषा को नवीन पथ पर अग्रसर किया। बाङ्ला भाषा की कवित्वमय जड़ता के टूटने का श्रीगणेश इसी छंद से हुआ। माइकल

मधुसूदन दत्त की प्रसिद्धि अब भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों में होने लगी। उनके दो प्रहसनों का अनुवाद बनारस के भारत जीवन प्रेस से हुआ। सन् 1861 तक उन्होंने अन्य चार ग्रंथ— 'मेघनाद वध', 'कृष्णकुमारी', 'ब्रजांगना' और 'वीरांगना' काव्य एक साथ शुरू किया और लगभग एक साथ पूर्ण किया। मधुसूदन के लिए यह काल कवित्व शक्ति का चरमोत्कर्ष का काल साबित हुआ।

उन्होंने विभिन्न भाषाओं का न सिर्फ ज्ञान प्राप्त किया, बल्कि उन भाषाओं की श्रेष्ठ रचनाओं को पढ़कर उसकी नव्यता का अनुकरण कर बंग भाषा को दिव्यता प्रदान की। भाषा सीखना, उसमें निष्णात होना और उन भावों का प्रकाशन अपनी भाषा में करना असाधारण है। शायद ही अन्य लेखकों में यह भाव इतने बृहत्तर रूप में दिखाई देता हो।

'रामायण' की पौराणिक कथा को आधार बनाकर उन्होंने 'मेघनाद वध' काव्य लिखा। मेघनाद को वीर केसरी के रूप में देखना मधुसूदन की उदात्त दृष्टि का परिणाम है, जिसमें वे स्थापित चरित्र को ही महत्ता नहीं देते, बल्कि हाशिये पर रखे गए वीर पुत्र के चरित्र को यथोचित स्थान देते हैं। 'मेघनाद वध' के चरित्र भले ही पौराणिक हैं, लेकिन वे सभी मानवीय धरातल के अधिक निकट हैं। साधारण मनुष्य से वे तनिक अधिक हैं, क्योंकि उनमें तप का बल है, वीर हैं, ऐश्वर्यशाली हैं। अमित्राक्षर छंद की योजना में निबद्ध यह नौ सर्ग में विभाजित काव्य है, तीन दिन और दो रात की घटनाओं के वर्णन क्रम में मेघनाद की पत्नी प्रमिला का चरित्र शौर्य और प्रेम के साथ आत्मत्याग की अद्‌भुत मिसाल है।

एक ओर राम हैं, जो अपने पिता की आज्ञा को सर्वोच्च मानते हैं तो दूसरी ओर मेघनाद है, जिसके लिए पिता की इच्छा ही सर्वोपरि है। यह जानते हुए भी कि उनके पिता की इच्छा गलत है। दूसरी ओर सीता और प्रमिला हैं, जिनका पातिव्रत ही सब कुछ है। विरोधाभासों का समन्वय मधुसूदन दत्त की विशिष्टता है। 'लिटरेचर ऑफ बंगाल' के लेखक बाबू रमेशचंद्र दत्त ने इस काव्य को देखते हुए मधुसूदन दत्त की अतीव प्रशंसा की।

माइकल मधुसूदन दत्त का स्वभाव परंपरा को चुनौती देना था। 'मेघनाद वध' में मेघनाद के चरित्र की विराटता इसका अप्रतिम उदाहरण है। राम और लक्ष्मण के चरित्र में वह विस्तार और विराट भाव नहीं दिखता, जिसकी अपेक्षा भारत का एक आम नागरिक करता है। चरित्र का संकुचन राम और लक्ष्मण में अनेक स्थलों पर मधुसूदन द्वारा दर्शाया गया है। इस कारण इसकी आलोचना भी की गई।

रावण की वीरता, विद्वता को दिखाने में मधुसूदन दत्त ने अपनी प्रतिभा का परिचय तो दिया ही दिया, लेकिन 'मेघनाद वध' के अनुवादक प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं : "राक्षस परिवार पर अत्यधिक आकर्षित हो जाने के कारण वह भगवान राम के आदर्श की रक्षा नहीं कर सका। कहीं-कहीं उच्चादर्शहीन हो गया है। जिन्हें हम ईश्वर का अवतार अथवा आदर्श वीर, आदर्श राजा और आदर्श गृहस्थ मानते और जानते हैं, उनमें भीरुता, दीनता और दुर्बलता का आरोप अनुचित है...आदर्श को विकृत करने का अधिकार किसी

को नहीं... मधुसूदन के जीवन में सर्वत्र एक आवेग भरा हुआ था। यही आवेग, ओज के रूप में उनकी कविता के लिए सब दोषों को छिपा देने वाला विशेष गुण बन गया। इसी के कारण 'मेघनाद वध' सदोष होने पर भी परम मनोहर काव्य है।"

मिल्टन और होमर की काव्यात्मक शैली का अनुकरण माइकल ने 'मेघनाद वध' में किया है। प्रथम सर्ग का प्रारंभ ही रावण के पुत्र वीरबाहु की वीरगति से होता है। रावण और उसकी पत्नी चित्रांगदा का संवाद मधुसूदन की नई दृष्टि का परिणाम है, जिसमें आत्मवंचक रावण के रूप में दिखाई देता है। जब रावण राम को देश वैरी कहता है तो चित्रांगदा उसे कुल वैरी कहकर उसे सत्य का भान करवाती है। रावण के दर्प को एक-एक कर टूटते हुए मधुसूदन दत्त दिखाना नहीं भूलते : *देश-वैरी मारता है रण में जो, धन्य है; / धन्य उसका है जन्म, मानती हूँ आपको/ धन्य मैं, प्रसू जो हुई ऐसे वीर सूनु की / किंतु सोचो नाथ, तब लंकापुरी है कहाँ;/ है वह अयोध्या कहाँ ? कैसे, किस लोभ से / राम यहाँ आया ? यह स्वर्णपुरी सुंदरी / इंद्र को भी वांछित है, अतुल त्रिलोकी में; / शोभित है रत्नाकर चारों ओर इसके / उन्नत प्राचीर जैसे रजत-रचित हो / सुनती हूँ सरयू किनारे वास उसका;/ मानव है तुच्छ वह। क्या तुम्हारा सोने का / सिंहासन छीनने को राघव है जूझता? / वामन हो चाहे कौन चंद्र को पकड़ना ? / देव, फिर देश-वैरी कहते हो क्यों उसे ?/ रहता सदैव नतमस्तक भुजङ्ग है, / किंतु यदि उस पै प्रहार करे कोई तो / फन को उठाके वह डसता है उसको।/ किसने जलाई यह कालानल लङ्का में ? / हाय ! निज कर्म-दोष से ही नाथ, तुमने / कुल को डुबाया और डूबे तुम आप भी !*

आत्मवंचक रावण के चरित्र को चित्रांगदा का चरित्र तार-तार कर देता है, भूल के स्वीकार का साहस रावण में नहीं था। इस काव्य में चित्रांगदा से रावण को सहानुभूति नहीं तिरस्कार मिलता है। वीरपुरी लंका के वीरशून्य होने के बाद भी युद्ध का आयोजन रावण के अहंकार को दर्शाता है : *काट कर कानन में एक शाखा को /अंत में लकड़हारा काटता है वृक्ष को;/ हे विधाता, मेरा महा वैरी यह वैसे ही/ करता है देख, बलहीन मुझे नित्य ही।*

माइकल मधुसूदन दत्त ने अपनी कवित्व शक्ति का परिचय देते हुए होमर और मिल्टन के साथ ग्रीक माइथोलॉजी का सहारा लिया। होमर के हेक्टर नामक वीर की पत्नी एंड्रोमेकी के समान प्रमिला का चरित्र चित्रण करना मधुसूदन की खासियत है। इस रचना में ग्रीक माइथोलॉजी के जूपिटर और उसकी पत्नी का समंजन, महादेव और पार्वती के रूप में तथा रति और कामदेव की परिकल्पना सौंदर्य की देवी अफ्रोदिति और निद्रा देव समनस से करना उनके ज्ञान लाघव का परिणाम था। स्वच्छंदता के कारण 'रामायण' से इतर कथानक लेकर 'इलियड' और 'कुमारसंभव सार' के अनुसार रचना करने के कारण कभी-कभी उन्होंने भारतवर्ष के आदर्श को भी विगलित किया। टैसो के आर्मिडा और राइनाल्डो की तरह मेघनाद और प्रमिला को व्यंजित मधुसूदन दत्त ही कर सकते थे। प्रमिला का चरित्र झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की झलक देता है। 'इलियड' और दाँते की रचना को ध्यानावस्थित कर इन्होंने 'रामायण' की मूल रचना को 'मेघनाद वध' में निमज्जित किया। दाँते और मिल्टन जैसे

महाकवि इनके प्रेरणास्रोत रहे। स्वर्ग और नरक वर्णन की परिकल्पना की प्राप्ति वे वहीं से लेते हैं, लेकिन 'इलियड' के आदर्श से इतर भारतीय नारी के रूप में प्रमिला के पातिव्रत का उद्घाटन करते हैं : *दासी को समर्पित किया था पिता-माता ने / जिसके करों में, आज सङ्ग-सङ्ग उसके / जा रही है दासी यह; एक पति के बिना / गति अबला की नहीं दूसरी जगत में। / और क्या कहूँ मैं भला ? भूलना न मुझको, / तुम सबसे है यही याचना प्र मिला की !/ चढ़के चिता पर (प्रसूनासन पै यथा) / बैठी महानंदमति पति-पद-प्रांत में; / कवरी-प्रवेश में प्रफुल्ल फूलमाला थी। / राक्षसों के बाजे बजे; वेद पाठ हो उठा / स्वर सह; रक्षोनारियों ने शुभ ध्वनि की;/ मिल उस शब्द-सङ्ग, गूँज उठा व्योम में/ हाहाकार ! चारों ओर वृष्टि हुई फूलों की।*[7]

ध्यान से देखा जाए तो 'मेघनाद वध' के माध्यम से महान कवि के आत्म संघर्ष को देखा जा सकता है। ऐसा कवि जो हर कसौटी पर खरा उतरना चाहता था। अंग्रेजी के साथ विश्व की तमाम भाषाओं को सीखना, विश्व के महान साहित्य को पढ़ना, अपनी भाषा को बेहतर देने के लिए पूर्व में लिखे और अभ्यास, अध्ययन को छोड़ कृतसंकल्प हो उसकी महत्ता के लिए सृजन करना माइकल के जीवन का असाधारण पक्ष है। अनुवाद के माध्यम से अपनी प्रतिभा को सिद्ध करने के साथ अनुवाद सृजन को उन्होंने साहित्य जगत में स्थापित किया।

महान कवि के आदर्शों का पालन करते हुए विभिन्न ध्रुवांतों को मिलाता हुआ यह सितारा धूमकेतु-सा अवतरित हुआ। अपनी संस्कृति, सभ्यता के साथ परंपरा के आख्यान का ज्ञान उसमें था। ईसाइयत को उन्होंने स्वीकारा और ईशा के पदों को भी लिखने का इन्होंने प्रयास किया। सामान्य युवा की तरह इंग्लैंड और फ्रांस जाने की चाह भी इन्होंने पूरी की, लेकिन बैरिस्टरी की पढ़ाई करते हुए कवि का हृदय सर्वोपरि रहा। यह साधारण नहीं है कि उनके लेखन के बारे में बाबू कालीप्रसन्न सिंह, राजा प्रतापचंद्र, राजा ईश्वरचंद्र, राजा दिगंबर मित्र, महाराजा यतींद्रमोहन के साथ ज्योतिरिंद्र ठाकुर, हेमचंद्र बंद्योपाध्याय, प्रसिद्ध नाटककार द्विजेंद्रलाल राय सभी ने एकमत से कहा, "बंगाल में अभी तक ऐसा कोई कवि उत्पन्न नहीं हुआ, जिसे मधुसूदन से ऊँचा आसन दिया जा सके।" अपने मित्र राजनारायण बाबू को एक कविता 'बंग भूमि के प्रति' लिखते हैं, जो अंग्रेजी कवि लार्ड बायरन की 'माय नेटिव लैंड गुड नाइट' से प्रभावित है। कविता की पंक्ति है : *मधुहीन करो ना गो तव मनः कोकनदे, /अर्थात् मनोरूपी कमल में मधु हीन न होने पाए/ अर्थात् तुम हमें भूल मत जाना।*

माइकल मधुसूदन दत्त अपने 200वें जयंती वर्ष में और आने वाले वर्षों में निरंतर याद किए जाएँगे। उनकी उपस्थिति साहित्य कुंज में अविरल सुनाई पड़ती रहती है। अपने वैश्विक और स्थानिक धरातल को एकमेक करता यह महान रचनाकार प्रेरणा पुंज बनकर देर तक चमकता रहेगा।

संपर्क : भारतीय भाषा केंद्र, भाषा, साहित्य एवं संस्कृत अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110067; मो. 9935288271